

डिजाइन द्वारा सुदृढ़ता: भारत के बैंकिंग क्षेत्र से सबक* श्री स्वामीनाथन जे.

विशिष्ट संकाय सदस्यों, प्रिय छात्रों, देवियों और सज्जनों।

कोलंबिया यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स में यहां आकर मुझे खुशी हो रही है। जैसा कि आप में से बहुत से लोग जानते होंगे, एसआईपीए की स्थापना 1946 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ऐसे समय में हुई थी, जब दुनिया एक नई अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए संस्थानों का पुनर्निर्माण कर रही थी। इसका उद्देश्य वैश्विक मामलों की समझ को प्रसारित करना और देशों, संस्थानों और विषयों में सार्वजनिक सेवा के लिए पेशवरों को तैयार करना था।

हम ऐसे समय में मिलते हैं जब वैश्विक नीति पर चर्चा फिर से महत्वपूर्ण विषयों से भरी हुई है: भू-राजनीति, जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, तकनीकी व्यवधान और आपूर्ति श्रृंखलाओं का पुनर्क्रम निर्धारण। इस पृष्ठभूमि के समक्ष बैंकिंग सुदृढ़ता एक आसान विषय की तरह लग सकता है। लेकिन इसकी एक विशिष्ट विशेषता है: जब यह अनुपस्थित होता है, तो इसके महत्व को तुरंत पहचाना जाता है। एक कमजोर बैंकिंग प्रणाली वित्तीय तुलन पत्र से कंपनियों, परिवारों, सार्वजनिक वित्त और व्यापक अर्थव्यवस्था तक दबाव को जल्दी से प्रसारित कर सकती है।

यही कारण है कि मैंने सोचा कि बैंकिंग सुदृढ़ता अंतरराष्ट्रीय, सार्वजनिक मामलों के स्कूल के लिए एक उपयुक्त विषय होगा और मैं आज भारत के अनुभव के माध्यम से इसे देखना चाहूंगा।

भारत की वर्तमान स्थिति : सतर्कता के साथ सुदृढ़ता

भारत आज अपेक्षाकृत मजबूत समष्टि-आर्थिक आधार पर खड़ा है।¹ भू-राजनीतिक अनिश्चितता, आपूर्ति-श्रृंखला व्यवधानों

और अस्थिर पण्य स्थितियों के बीच भी, घरेलू आर्थिक गतिविधि ने सुदृढ़ता दर्शाया है, जो औद्योगिक और सेवा गतिविधियों में मजबूती, व्यापक-आधारित मांग और कॉरपोरेट कार्य-निष्पादन में सुधार द्वारा समर्थित है। मुद्रास्फीति हमारे सहनीयता दायरे के भीतर है और बाहरी कमजोरियां प्रबंधनीय बनी हुई हैं। भारतीय वित्तीय प्रणाली मजबूती के साथ इस अनिश्चित चरण में प्रवेश करती है : मजबूत तुलन-पत्र , संतोषजनक पूंजी बफर, बेहतर लाभप्रदता और बहु-दशक के निचले स्तर पर गैर-निष्पादित आस्तियां।

मजबूती की यह स्थिति उत्साहजनक है। लेकिन एक प्रबल संदेश जो हम लगातार बैंकों और अन्य विनियमित संस्थाओं को देते हैं, वह यह है कि सुदृढ़ता विकसित का सबसे अच्छा समय तब होता है जब परिस्थितियां अनुकूल होती हैं। केंद्रीय बैंकों को कभी-कभी अन्यथा आशावादी समय में सतर्क आवाजों के रूप में देखा जाता है, जब ऐसा प्रतीत होता हो कि पक्षकार सुपरिचालित हैं तो उनसे कठिन प्रश्न पूछने की उम्मीद की जाती है।² बैंकिंग में, अक्सर यही बात होती है। जोखिम प्रायः अच्छे समय में चुपचाप निर्मित होता रहता है और परिस्थितियों में बदलाव होने पर स्वयं को अचानक कठोरता के साथ प्रस्तुत कर देता है। वृद्धि जब सुदृढ़ हो, आस्ति की गुणवत्ता संतोषजनक दिखाई देती हो और जोखिम की भूख स्वाभाविक रूप से बढ़ी हो तो ऐसे में बफर्स, अभिशासन और जोखिम अनुशासन को मजबूत किया जाना चाहिए। इसलिए परीक्षण करने से पहले सुदृढ़ता का निर्माण किया जाना चाहिए।

आज मेरी टिप्पणी के विषय के पीछे यही विचार है: डिजाइन से सुदृढ़ता। भारत का हालिया बैंकिंग सुदृढ़ता नीतिगत पहलों को सीखने, पर्यवेक्षी सतर्कता, मजबूत विवेकपूर्ण ढांचे, दबाव की पारदर्शी पहचान, विश्वसनीय त्रुटिनिवारण तंत्र और बैंकों के भीतर सुधार को दर्शाता है।

सार्वजनिक नीति के श्रोताओं के लिए, महत्वपूर्ण सवाल यह नहीं है कि क्या आज बैंक मजबूत हैं, बल्कि यह कि इसकी सुदृढ़ता कैसे बनाई और संरक्षित रखी जाती है। बैंकिंग सुदृढ़ता विकास या अनुकूल परिस्थितियों से स्वचालित रूप से उत्पन्न नहीं होता है। इसे कई स्तरों पर डिजाइन किया जाना चाहिए: बैंकों को नियंत्रित करने वाले नियमों में, कमजोरियों का पता

* जून, 2026 को कोलंबिया विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स (एसआईपीए) में भारतीय रिजर्व बैंक के उप गवर्नर श्री स्वामीनाथन जे का भाषण।

¹ आरबीआई बुलेटिन, मई 2026 में कहा गया है कि घरेलू आर्थिक गतिविधियों ने अप्रैल 2026 में सुदृढ़ता का प्रदर्शन किया, जिसमें औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों ने कई क्षेत्रों में मजबूती बनाए रखी; सीपीआई मुद्रास्फीति अप्रैल में 3.5 प्रतिशत रही, जिसमें मुख्य मुद्रास्फीति स्थिर रही; मार्च में लगातार दूसरे महीने निवल एफडीआई सकारात्मक रहा; और सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों ने 2025-26 की चौथी तिमाही में कुल बिक्री और परिचालन लाभ में दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की। इसमें यह भी कहा गया है कि सूचीबद्ध बैंकिंग और वित्तीय कंपनियों ने उच्च राजस्व वृद्धि और निवल लाभ वृद्धि में वृद्धि देखी, जो मुख्य रूप से कम प्रावधानों और आकस्मिकताओं को दर्शाती है।

² "पार्टी के जोर पकड़ते ही पंच बाउल हटा लेना" एक मशहूर वित्तीय रूपक है, जिसका श्रेय 1955 में फ्रेडरल रिजर्व के पूर्व चेयरमैन विलियम मैकचेस्नी मार्टिन को दिया जाता है।

लगाने वाली पर्यवेक्षी प्रणालियों में, दबाव को कम करने वाली समाधान संरचना में और स्वयं बैंकों के कार्य व्यवहार में। भारत का हालिया अनुभव बताता है कि सुदृढ़ता तब सबसे मजबूत होती है जब उपर्युक्त तत्व एक-दूसरे को सशक्त करते हैं।

मैं इस विचार को डिजाइन द्वारा सुदृढ़ता के पांच हालिया आयामों के माध्यम से स्पष्ट करता हूँ: दबाव की पारदर्शी पहचान, तुलन-पत्र को सुदृढ़ करना, प्रभावी पर्यवेक्षण, सुविचारित और अनुकूलित विनियमन तथा बैंकों के भीतर सुदृढ़ता।

दबाव की पहचान

पहला आयाम दबाव की पारदर्शी पहचान है।

बैंकिंग परीक्षण हमें सिखाता है कि जोखिम अक्सर तब बनता है जब परिस्थितियाँ अनुकूल दिखाई देती हैं। एक उछाल के दौरान, संपार्श्विक मूल्य पर्याप्त दिखते हैं, अनुमानित नकदी प्रवाह उचित दिखाई देते हैं, और आशावाद ऋण मूल्यांकन में अंतर्निहित हो जाता है। एक परियोजना जोखिम, पुनरसंरचना निर्णय, संपार्श्विक मूल्यांकन या क्षेत्रक केन्द्रीयता किसी बैंक के लिए प्रबंधनीय लग सकती है। लेकिन जब इसी तरह की धारणाओं को संस्थानों में दोहराया जाता है, तो वे समष्टि-वित्तीय सुभेद्यता उत्पन्न कर सकते हैं।

2015 के बाद के भारत के आस्ति गुणवत्ता अनुभव ने इस मुद्दे को ध्यान में लाया। आस्ति गुणवत्ता समीक्षा के बाद जो दबाव दिखाई दे रहा था, वह कई वर्षों में उत्पन्न हुआ था। यह कुछ क्षेत्रों में तेजी से ऋण वृद्धि, बड़ी और लंबी अवधि वाली परियोजनाओं से जुड़ी चुनौतियों, बदलती आर्थिक स्थितियाँ, दबाव की पहचान में देरी और कुछ मामलों में, जोखिम प्रबंधन और अभिशासन संरचना में कमियों सहित कारकों के संयोजन को दर्शाता है।

आस्ति गुणवत्ता समीक्षा एक लेखांकन परीक्षण से कहीं अधिक थी। इसने बैंकिंग प्रणाली की सूचना व्यवस्था को बदल दिया। पहचान के लिए बैंकों को प्रावधान करने, मालिकों को पुनर्पूँजीकरण करने, उधारकर्ताओं को मोल-भाव करने, पर्यवेक्षकों को हस्तक्षेप करने और बाजारों को जोखिम का पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता थी। पारदर्शिता प्रोत्साहन को बदलती है।

बैंक बोर्ड के एजेंडे में पहचान शायद ही कभी सबसे लोकप्रिय वस्तु है। यह रिपोर्ट की गई लाभप्रदता, पूँजी नियोजन, बाजार

की धारणा और कभी-कभी आंतरिक आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। लेकिन विलंबित पहचान आमतौर पर अधिक महंगी होती है। यह ऋण अनुशासन को कमजोर करता है, नुकसान के वास्तविक आवंटन को अस्पष्ट करता है और समाधान के अंतिम बोझ को बढ़ाता है। इसलिए समय पर आस्ति गुणवत्ता की पहचान वित्तीय स्थिरता के संस्थागत ढाँचे का हिस्सा है।

तुलन पत्र को मजबूत करना

मान्यता अपने आप में पर्याप्त नहीं है। इसके बाद तुलन पत्र की मजबूती के लिए कार्रवाई की एक विश्वसनीय श्रृंखला होनी चाहिए। समाधान के बिना मान्यता बैंकों की तुलन पत्र को सीमित कर सकती है। अभिशासन में सुधार के बिना पूँजी समर्थन वित्तीय मैट्रिक्स में सुधार कर सकता है लेकिन सुदृढ़ता में योगदान नहीं कर सकता है। मजबूत सुरक्षा देने वाले मानकों के बिना समाधान, दबाव के अगले चक्र का कारक सकता है।

भारत में, इस चरण में सार्वजनिक नीति संबंधी ईकोसिस्टम में समन्वित कार्रवाई शामिल थी। सरकार ने कानूनी, राजकोषीय और संस्थागत संरचना के महत्वपूर्ण तत्व प्रदान किए। दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता ने समाधान के माहौल को मजबूत किया और लेनदारों और उधारकर्ताओं के बीच संबंधों को बदल दिया। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पुनर्पूँजीकरण ने मान्यता प्राप्त घाटे को अवशोषित करने और ऋण देने की क्षमता को बहाल करने में मदद की। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के समेकन ने बड़े पैमाने और पूँजी शक्ति वाले संस्थानों का निर्माण करने की मांग की। जमाकर्ताओं की सुरक्षा, वसूली कानून, ऋण गारंटी, वित्तीय समावेशन पहल और डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे ने भी एक गहरी और अधिक औपचारिक वित्तीय संरचना में योगदान दिया।

बैंकिंग प्रणाली ने भी महत्वपूर्ण तुलन पत्र को मजबूत करने का काम किया। बैंकों ने प्रावधानीकरण में सुधार किया, वसूली और बड़े खाते में डालने का प्रयास किया, पूँजी जुटाई और परिसंपत्ति की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। अधिक पारदर्शी, बेहतर प्रावधान और विविध तुलन पत्र की दिशा में आंदोलन सुदृढ़ता यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

मजबूत पर्यवेक्षण और विवेकपूर्ण अनुशासन

रिज़र्व बैंक का पर्यवेक्षी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुआ है। ध्यान अब इकाई-स्तरीय अनुपालन या पॉइंट-इन-टाइम निरीक्षण निष्कर्षों तक सीमित नहीं है। यह पर्यवेक्षित

संस्थाओं के अधिक व्यापक, जोखिम-आधारित और दूरदेशी मूल्यांकन की ओर बढ़ गया है, जिसमें अभिशासन, आश्वासन कार्य, आचरण, व्यापार मॉडल, प्रौद्योगिकी जोखिम, साइबर सुदृढ़ता और उभरती तुलन पत्र कमजोरियां शामिल हैं।

इस दृष्टिकोण का एक प्रमुख तत्व बैंकों के बोर्डों और वरिष्ठ प्रबंधन के साथ गहरा जुड़ाव रहा है। पर्यवेक्षी निष्कर्षों का उपयोग न केवल कमियों की पहचान करने के लिए किया जाता है, बल्कि उनके मूल कारणों को समझने के लिए भी किया जाता है: चाहे वे कमजोर अभिशासन, अपर्याप्त जोखिम प्रबंधन, अप्रभावी आंतरिक लेखापरीक्षा, खराब अनुपालन संस्कृति, प्रौद्योगिकी अंतराल या गलत संरेखित प्रोत्साहन से उत्पन्न हों। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मुद्दों को केवल सतह पर ठीक करने के बजाय उनके स्रोत पर ही संबोधित किया जाए।

इसके साथ ही पर्यवेक्षी टूलकिट को भी मजबूत किया गया है। ऑफ-साइट निगरानी, दबाव परीक्षण, सुभेद्यता आकलन प्रारंभिक चेतावनी संकेतक, साइबर जोखिम संकेतक, विषयगत समीक्षा, आचरण-संबंधी आकलन और माइक्रो-डेटा एनालिटिक्स अब पर्यवेक्षी प्रक्रिया के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। ये उपकरण पर्यवेक्षकों को अलग-अलग व्यक्तिगत तुलन पत्र पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय संस्थानों और गतिविधियों में पैटर्न की पहचान करने में मदद करते हैं।

इसके लिए बैंकों के भीतर आश्वासन के व्यापक दृष्टिकोण की भी आवश्यकता है। पर्यवेक्षण बोर्ड की जिम्मेदारी, वरिष्ठ प्रबंधन, जोखिम प्रबंधन, अनुपालन, आंतरिक लेखापरीक्षा और बाहरी लेखापरीक्षा का विकल्प नहीं हो सकता है। पर्यवेक्षण केवल निरीक्षण की एक अतिरिक्त परत के रूप में कार्य कर सकता है, लेकिन सुदृढ़ता पहले संस्था के भीतर बनाई जानी चाहिए।

बड़ा मुद्दा यह है कि आधुनिक पर्यवेक्षण केवल नियमों के अनुपालन की जांच करने के बारे में नहीं है। यह पूछने के बारे में है कि क्या अभिशासन प्रभावी है, क्या जोखिमों को समझा जाता है और सही ढंग से उनकी कीमत तय की जाती है, क्या नियंत्रण कार्य प्रभावी हैं। क्या ग्राहक आचरण निष्पक्ष है, क्या प्रौद्योगिकी जोखिमों का प्रबंधन किया जाता है और क्या संस्था अपने मुख्य कार्यों को दबाव के दौरान जारी रख सकती है।

सुविचारित और अनुकूली विनियमन

चौथा आयाम सुविचारित और अनुकूलनशील विनियमन है।

आधुनिक वित्तीय मध्यस्थता अब पारंपरिक संस्थागत सीमाओं के भीतर बड़े करीने से फिट नहीं बैठती है। क्रेडिट, भुगतान, ग्राहक अधिग्रहण, हमीदारी, सर्विसिंग और प्रौद्योगिकी सहायता में बैंक, एनबीएफसी, फिनटेक संस्थाएं, भुगतान प्रणाली, ऋण सेवा प्रदाता और तृतीय-पक्ष प्रौद्योगिकी भागीदार शामिल हो सकते हैं। इससे बैंकों का महत्व कम नहीं होता है; यह प्रणाली को अधिक परस्पर जुड़ा हुआ बनाता है और जोखिम के संचरण को अधिक जटिल बनाता है।

इसलिए, विनियामक प्रतिक्रिया इकाई-जागरूक और गतिविधि-जागरूक दोनों होनी चाहिए। किसी बैंक या एनबीएफसी की सुदृढ़ता उसके अभिशासन, पूंजी, चलनिधि, जोखिम प्रबंधन और आचरण पर निर्भर करती है। साथ ही, जहां समान गतिविधियां समान जोखिम पैदा करती हैं, विनियामक ध्यान अंतर्निहित जोखिम के साथ जुड़ा रहना चाहिए, चाहे संस्थागत रूप कुछ भी हो।

यह दृष्टिकोण हाल के उपायों जैसे एनबीएफसी के लिए स्केल-आधारित विनियमन, शहरी सहकारी बैंकों के लिए टियर-आधारित विनियामक ढांचे, डिजिटल ऋण दिशानिर्देश, आईटी अभिशासन आवश्यकताओं और धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन पर निर्देश जैसे उपायों में परिलक्षित होता है। यह कोविड-19 अवधि के दौरान भी दिखाई दिया, जब स्थिति में सुधार के साथ सामान्य विवेकपूर्ण उपचार के लिए एक रास्ता बनाए रखते हुए समय पर सहायता प्रदान करने के लिए राहत उपायों को डिजाइन किया गया था। सनसेट क्लॉज का उपयोग पहले के संकट के एपिसोड से एक महत्वपूर्ण सबक को दर्शाता है: समर्थन उपायों को दीर्घकालिक जोखिम अनुशासन को कमजोर किए बिना निकट अवधि के दबाव को कम करना चाहिए।

आरबीआई की पहल सुविचारित विनियमन में उसके प्रयासों को भी दर्शाती है : नवाचार को बाधित किए बिना ग्राहकों की रक्षा करना, जिम्मेदार आचरण सुनिश्चित करते हुए समावेशन का समर्थन करना, और सुरक्षा उपायों को कमजोर किए बिना अनावश्यक संघर्ष को कम करना।

एक अर्थ में, डिजाइन द्वारा सुदृढ़ता का अर्थ निरंतर समीक्षा द्वारा विनियमन भी है। नियम निश्चितता प्रदान करने के लिए पर्याप्त स्थिर होने चाहिए, लेकिन प्रासंगिक बने रहने के लिए पर्याप्त अनुकूल होना चाहिए। उन्हें तैयार किए जाने पर सही होना चाहिए, और समय के साथ सही रखा जाना चाहिए।

क्योंकि बाजार विकसित होते हैं, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन होता है और सबूत जमा होते हैं। इसने नियमों की समय-समय पर समीक्षा को मजबूत करने और हितधारक परामर्श को गहरा करने के लिए रिजर्व बैंक के भीतर हाल ही में संस्थागत पहल³ को भी सूचित किया है।

बैंकों में सुदृढ़ता

पांचवां आयाम बैंकों में सुदृढ़ता है।

सरकारें फ्रेमवर्क बना सकती हैं, और विनियामक अपेक्षाएं निर्धारित कर सकते हैं, लेकिन सुदृढ़ता बैंकों के अंदर अंतर्निहित होना चाहिए। यह इस बात से स्पष्ट होना चाहिए कि बैंक कैसे आस्तियों की उत्पत्ति करते हैं, कीमत जोखिम का प्रबंधन करते हैं, देनदारियों का प्रबंधन करते हैं, धन का निवेश करते हैं, दबाव की निगरानी करते हैं, प्रौद्योगिकी को नियंत्रित करते हैं, ग्राहकों के साथ व्यवहार करते हैं और चिंताओं को बढ़ाते हैं।

हाल के वर्षों में एक महत्वपूर्ण बदलाव पोर्टफोलियो व्यवहार में बदलाव रहा है। पहले दबाव बड़े, जटिल कॉरपोरेट और बुनियादी ढांचे के जोखिम में केंद्रित था। बैंकों ने तब से अधिक विस्तृत पोर्टफोलियो, बेहतर रेटिंग वाले कॉरपोरेट एक्सपोजर, खुदरा, एमएसएमई और स्पष्ट जोखिम मूल्यांकन के साथ अन्य क्षेत्रों की ओर रुख किया है। ये खंड जोखिम मुक्त नहीं हैं। खुदरा और असुरक्षित ऋण अपनी खुद की असुरक्षितता पैदा कर सकते हैं। हालांकि, एक विविध और बेहतर निगरानी वाला पोर्टफोलियो संरचनात्मक रूप से कुछ बड़े, सहसंबद्ध एक्सपोजर के प्रभुत्व से अलग है।

यह बैंक-स्तरीय रूपान्तरण मायने रखता है क्योंकि सुदृढ़ता का टिकाऊपन संस्थानों के अंदर व्यवहार पर निर्भर करती है। सार्वजनिक नीति ढांचा बना सकती है, लेकिन बैंकों को सबक को व्यवहार में बदलना चाहिए। अंत में, सुदृढ़ता रोजमर्रा के निर्णयों के माध्यम से बनाया जाता है: क्या वित्तपोषित किया जाता है, जोखिम की कीमत कैसे तय की जाती है, अपवादों को कैसे मंजूरी दी जाती है, प्रारंभिक चेतावनियों पर कैसे कार्रवाई की जाती है, प्रौद्योगिकी जोखिमों को कैसे नियंत्रित किया जाता है और जवाबदेही कैसे लागू की जाती है।

³ रिजर्व बैंक ने इससे पहले विनियामक निर्देशों को सुव्यवस्थित करने और अनुपालन बोझ को कम करने के लिए एक समयबद्ध विनियम समीक्षा प्राधिकरण 2.0 अभ्यास शुरू किया था, जिसमें अनावश्यक परिपत्रों को वापस लेना या निरस्त करना और विवरणियों को युक्तिसंगत बनाना शामिल था। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने विनियमन विभाग में एक विनियामक समीक्षा प्रकोष्ठ के माध्यम से विनियामक समीक्षा के लिए संस्थागत तंत्र को मजबूत किया है, जिसका उद्देश्य समीक्षा प्रक्रिया में उद्योग की प्रतिक्रिया को शामिल करने के लिए विनियमन पर एक बाहरी सलाहकार समूह के सहयोग से हर पांच से सात साल में विनियमों की व्यापक और व्यवस्थित समीक्षा सुनिश्चित करना है।

अगले परीक्षण : जटिलता और अनिश्चितता

हाल की कुछ पहलों और अनुभवों पर चर्चा करने के बाद, संक्षेप में यह देखना उपयोगी होगा कि आगे क्या होने वाला है। बैंकिंग सुदृढ़ता का अगला चरण ज्ञात तुलन-पत्र दबाव को संबोधित करने के बारे में कम और जटिलता और अनिश्चितता के प्रबंधन के बारे में अधिक होगा।

हाल के वर्षों से पता चला है कि आघात बहुत अलग स्रोतों से उत्पन्न हो सकते हैं : जैसे महामारी, भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, पण्य की कीमत में अस्थिरता, साइबर घटनाएं या बाजार की रुख में अचानक बदलाव। इसलिए, कार्य न केवल बैंकों को ज्ञात जोखिमों के लिए तैयार करना है, बल्कि उन्हें उन जोखिमों के अनुकूल बनाना भी है जिनके समय, रूप और संचरण की पूर्वानुमान करना मुश्किल हो सकता है।

खुदरा ऋण, डिजिटल ऋण और सूक्ष्म वित्त ने पहुंच का विस्तार किया है, लेकिन उन्हें सावधानीपूर्वक हामीदारी, निष्पक्ष वसूली प्रथाओं और उधारकर्ता लीवरेज की करीबी निगरानी की भी आवश्यकता होती है। इसी तरह, प्रौद्योगिकी बैंकिंग को तेज कर सकती है, लेकिन यह स्वचालित रूप से इसे समझदार नहीं बनाती है। इसलिए एआई, साइबर जोखिम, तीसरे पक्ष की निर्भरता, जलवायु से संबंधित जोखिम और वित्तीय अंतर्संबंध पर बैंकों और पर्यवेक्षकों से निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष

मैं एक व्यापक विचार के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं। बैंकिंग सुदृढ़ता कोई निश्चित उपलब्धि नहीं है। यह एक सतत संस्थागत परियोजना है। जैसा कि भारत के हाल के अनुभव से पता चला है, यह तुलन-पत्र और उससे आगे अनुशासन, दबाव की पारदर्शी पहचान, तुलन-पत्र को मजबूत करने, सुविचारित और अनुकूली विनियमन और बैंकों के भीतर जिम्मेदार आचरण के माध्यम से बनाया गया है।

मजबूत बैंकों को पूंजी और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है, लेकिन उन्हें निर्णय, अभिशासन, जवाबदेही और सीखने वाले संस्थानों की भी आवश्यकता होती है। यह, शायद, केंद्रीय सार्वजनिक नीति सबक है: सुदृढ़ता केवल आखिरी आघात का सामना करने के बारे में नहीं है, बल्कि अगले आघात का अच्छी तरह से जवाब देने की क्षमता निर्माण के बारे में भी है।

धन्यवाद। जय हिंद।